श्री कमलेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विभाग, रोहतास महिला कालेज सासाराम।
वर्ग – बी०ए० पार्ट – I 'प्रतिष्ठा'
पत्र – Ist, यूनिट नं० – 30
राजनीतिक विचारक – डा० पुखराज जैन
दिनांक – 9-07-2020

Pol.Sc I Paper.

Q.4 मार्क्स द्वारा प्रतिपादित वर्ग संघर्ष की आलोचनात्मक व्याख्या करें?

Ans→ वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त मार्क्स का एक प्रमुख सिद्धान्त है। यह समाज में होनेवाली परिवर्तनों की प्रक्रिया को सूचित करती है। वास्तव में वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद का एक उपसूत्र है। मार्क्स की आर्थिक नियतिवाद की सबसे महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति इस बात में देखी जाती है कि समाज में सदैव से ही विरोधी आर्थिक वर्गों का अस्तित्व रहा है। पहला वर्ग सदैव से ही दूसरे वर्ग का शोषण करते आ रहा है।

मार्क्स के अनुसार वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त इतिहास की व्याख्या के लिए अचूक औजार है। वर्ग संघर्ष का इतिहास ही मानव जाति का इतिहास है। प्रत्येक काल और प्रत्येक देश में आर्थिक और राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए संघर्ष होते रहते हैं। प्राचीन रोम में एक कुलीन वर्ग था तो दूसरी ओर भू-दास। दोनों वर्गों को कभी खुलकर और कभी छिपकर निरंतर संघर्ष करते रहे हैं और दूसरी ओर इसी संघर्ष के कारण समाज की क्रांतिकारी पुनर्रचना होती है।

Scanned with CamScanner

वर्ग संघर्ष की व्याख्या :→ इतिहास की आर्थिक व्याख्या करते हुए मार्क्स कहते हैं कि जिस समूह के आर्थिक हित जमींदारों का वर्ग, उद्योग पतियों का वर्ग, किसानों का वर्ग, मजदूरों आदि का वर्ग सभी अपने-अपने हितों की रक्षा करते हैं। संघर्ष का अर्थ केवल युद्ध नहीं होता है उसका व्यापक अर्थ ~~वर्गों के~~ असंतोष और असहयोग भी है। जब यह कहा जाता है कि वर्गों में अनादिकाल से सदैव संघर्ष होता रहा है। तो इसका अर्थ यह नहीं कि हमेशा युद्ध की ज्वाला भड़की रही है। यह तो मात्र थोड़े समय के लिए भड़की है शोषण काल में यह असंतोष और रोष की भावना के रूप में धीरे-धीरे सलगती रहती है।

मार्क्स की धारणा है कि वर्गों के स्वरूप

Scanned with CamScanner

मे भी अंतर आता रहे; परन्तु समाज के वर्ग उत्पादक के साधनों पर भूमि और पूँजी पर अधिकार रखता है। इसे जमीन्दार या पूँजी पति वर्ग कहा जाता है। दूसरा वर्ग इन पर आश्रित रहने वाला और अपने परिश्रम पर जीने वाला वर्ग होता है। इसे भू-दास या मजदूर कहा जाता है। पहला वर्ग बीना कुछ परिश्रम किये दूसरे वर्ग के परिश्रम से लाभ उठाता है। इसे ही शोषण कहा जाता है। इसी आधार पर पहला वर्ग शोषक हुआ और दूसरा वर्ग शोषित। इन वर्गों के स्वरूप मे हमेशा अंतर आते रहते है।

इस अंतर को मार्क्स निम्न लिखित उदाहरणों से समझाने का प्रयत्न करते है। समाज मे पहले दास-प्रथा थी। अब यद्यपि इसका लोप हो गया है। तथापि शोषण का अंत नही हुआ है। अब पूँजीवाद ने कारखाने के माध्यम से मजदूरो का शोषण प्रारंभ कर दिया है। अतः अनादिकाल से ही एक वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण करते आ रहे है। इसलिये मार्क्स ने "कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो" नामक पुस्तक मे लिखा है कि - "अब तक के समस्त समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।" "स्वतंत्र मनुष्य और दास कुलीन तथा जन साधारण सामन्त और रैयत आधिक संघ के स्वामी और कारीगर एक शब्द मे कहे तो, "शोषित" और "शोषक" कहा जायेगा। एक दूसरे के विरोध मे खड़े होकर कभी प्रत्यक्ष या कभी अप्रत्यक्ष रूप मे अनवरत युद्ध करते है। क्रमशः

Scanned with CamScanner